Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **March 2023**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **7** pages. Any blank pages are indicated.

© UCLES 2023

MALE: **अभ्यास 1: प्रश्न 1–6**

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: **संवाद 1**

MALE: * देवियो और सज्जनो, यह भारत की सबसे बड़ी और मशहूर तिहाड़ जेल है। इसके बाहरी हिस्से को दो साल से एक विरासती होटल में बदल दिया गया है। ताकि देश-विदेश से आए सैलानी दिल्ली के दर्शनीय स्थानों की सैर करने के साथ-साथ जेल में रहकर यहाँ के कई नामी क़ैदियों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी का अनुभव भी कर सकें। यहाँ रहने वालों को क़ैदियों के साथ काम करने और खाना खाने का अवसर दिया जाता है। लेकिन बाकी सब सुविधाएँ पाँच सितारा होटलों जैसी हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 2**

MALE: * पुरुषः व्यायाम घर!

महिलाः हैलो! मैं आपकी व्यायाम-शाला की सदस्य बनना चाहती हूँ।

पुरुषः आपका स्वागत है। हम दो तरह के सदस्य बनाते हैं, स्वर्ण और रजत।

महिलाः जी, उनके बारे में थोड़ा बताइए।

पुरुषः स्वर्ण सदस्य हफ़्ते में जितनी बार चाहें आ सकते हैं और रजत सदस्य हफ़्ते में केवल चार बार।

महिलाः मैं तो हफ़्ते में ज़्यादा से ज़्यादा तीन बार ही आ सकती हूँ।

पुरुष: ठीक है। आपके लिए रजत सदस्यता सही रहेगी।

महिलाः धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 3**

FEMALE: * हैलो सरल! अगले हफ़्ते तालकटोरा उद्यान में होने वाले रंगारंग कार्यक्रमों के बारे में बताना चाहती थी। बुरी ख़बर यह है कि सोमवार को होने वाली सुगम संगीत सभा तो रद्द हो गई है और मंगलवार की सभा के सारे टिकट बिक चुके हैं। बुधवार और बृहस्पतिवार के टिकट मिल रहे हैं। लेकिन मुझे पता है कि उन दिनों तुम खाली नहीं हो। ख़ैर, शुक्रवार के लिए एक प्रस्ताव है। मेरी मित्र पारुल ने उस दिन शाम को पार्टी रखी है। मैंने तुम्हारी तरफ़ से भी हाँ कर दी है। उम्मीद है तुम आ सकोगे। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 4**

FEMALE: * महिलाः सुदीप, तुम्हारा पक्षियों वाला प्रोजेक्ट कैसा चल रहा है? तुमने नीलकंठ पक्षी को चुना था न?

पुरुषः जी मैम, मैंने जानकारी जुटाना शुरू कर दिया है।

महिलाः बढ़िया। तुम्हें मालूम है न कि नीलकंठ को कुछ लोग गरुड़ भी समझते हैं।

पुरुषः अच्छा! यह दिलचस्प बात बताई आपने! लेकिन क्या गरुड़ नीलकंठ से बड़े नहीं होते?

महिलाः हाँ, कम से कम चील जितने बड़े तो होते ही हैं।

पुरुषः मैम, मैंने नीलकंठ पक्षियों की संख्या के आँकड़े जुटा लिए हैं। समझ नहीं आ रहा अब मैं उनका क्या करूँ।

महिलाः अरे वाह! तो फिर तुम उसका एक ग्राफ़ क्यों नहीं बना लेते?

पुरुषः धन्यवाद, मैम। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 5**

MALE: * काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान को भारत के पूर्वोत्तरी राज्य असम का गर्व माना जाता है। दुनिया के साठ प्रतिशत से ज़्यादा एक सींग वाले भारतीय गैंडे यहीं पाए जाते हैं, इसलिए इसे गैंडाघर भी कहा जाता है। दुनिया में बाघों की सबसे घनी आबादी होने के कारण **2006** में इसे अभयारण्य भी बना दिया गया था। यह राष्ट्रीय उद्यान यूनेस्को का विश्व विरासत स्थल भी है। यह असम के दो ज़िलों - गोलाघाट और नोआगाँव में फैला है। यहाँ आप तरह-तरह के जंगली जानवर देख सकते हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 6**

MALE: * पुरुषः शैला, मुझे इस साल गर्मी की छुट्टियों का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार है।

महिलाः क्यों रवि? किसी ख़ास जगह जा रहे हो क्या?

पुरुषः ख़ास? अरे भई, सिक्किम जा रहे हैं, कंचनजंघा पर चढ़ाई करने!

महिलाः हँ! पर तुम तो मालदीव्स के किसी टापू की बात कर रहे थे!

पुरुषः नहीं शैला, उसे अगले साल के लिए टाल दिया है। ख़ैर, क्या तुम अपना कैमरा उधार दोगी?

महिलाः हाँ, ले जाना। पर चढ़ाई के लिए सही जूते ख़रीदना मत भूलना।

पुरुषः वो तो ले भी लिए। अब बस एक बढ़िया सा बैग लेना बाक़ी है।

महिलाः ठीक है। ख़ूब सारी तस्वीरें भेजना! **

[Pause 10 seconds]

MALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

MALE: **शहीद भगत सिंह के लेखन और विचारों का परिचय देने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।**

यह वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * शहीद भगत सिंह को आज भी ज़्यादातर लोग क्रान्तिकारी के रूप में जानते हैं। यह कम ही लोगों को पता है कि वह गंभीर अध्येता ही नहीं, प्रगतिशील पत्रकार और अच्छे रचनाकार भी थे। हाल के कुछ वर्षों में कई प्रकाशकों ने भगतसिंह और उनके साथियों का साहित्य आम जनता तक पहुँचाया है। आम आदमी को उनके विचारों से अवगत कराने में प्रशंसनीय भूमिका निभाई है।

'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' जैसे उनके प्रसिद्ध लेख, महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ और जेल नोटबुक आज लाखों पाठकों तक पहुँच चुके हैं। आज़ादी के आंदोलन के दौरान सन् 1924 में पंजाब में भाषा का विवाद चला था। उसके दौरान पंजाबी भाषा किस लिपि में लिखी जाए इस प्रश्न पर उर्दू और हिन्दी के पक्षधरों की एक बहस में, भगत सिंह ने भी पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रतियोगिता के लिए एक लेख लिखा था, जिस पर उनको 50 रुपए का इनाम भी मिला था।

भगत सिंह का वह लेख 'सन्देश' पत्रिका के हिंदी संस्करण में प्रकाशित किया गया था। उसमें भगत सिंह ने लिखा, 'किसी समाज अथवा देश को पहचानने के लिए उस समाज अथवा देश के साहित्य से परिचित होने की आवश्यकता होती है, क्योंकि समाज के प्राणों की चेतना उस समाज के साहित्य में प्रतिबिंबित हुआ करती है।' कबीर के साहित्य के कारण समाज में उनकी बातों का स्थायी प्रभाव दीख पड़ता है। यही बात गुरु नानकदेव जी के विषय में भी कही जा सकती है।

भगत सिंह का मानना था कि स्वतंत्रता सभी का एक कभी न ख़त्म होने वाला जन्म-सिद्ध अधिकार है और समाज वास्तव में श्रम के सहारे चलता है। मैं एक मानव हूँ और जो कुछ भी मानवता को प्रभावित करता है उससे मुझे मतलब है।

भगत सिंह कहते हैं कि नौजवान जब भी जागे हैं, इतिहास ने करवट बदली है। सुधार तो युवकों के परिश्रम, साहस, बलिदान और निष्ठा से होते हैं, जिनको भयभीत होना आता ही नहीं और जो विचार कम और अनुभव अधिक करते हैं। आज भी इस देश के शिक्षित लोगों का एक बड़ा हिस्सा भगत सिंह को एक महान वीर तो मानता है, पर वह नहीं जानता कि 23 वर्ष का वह युवा एक महान चिन्तक भी था। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8-15**

FEMALE: **बाल मनोवैज्ञानिक शुभा सेन के साथ युवमंच के प्रस्तुतकर्ता भानु प्रताप की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * भानुः प्रो शुभा सेन, युवमंच पर आपका स्वागत है। आपने भारत के आँगनबाड़ी कार्यक्रम और बच्चों के विकास में इसकी भूमिका पर काम किया है। सबसे पहले तो यह बताइए कि आँगनबाड़ी कार्यक्रम है क्या?

शुभाः धन्यवाद भानु जी। आँगनबाड़ी कार्यक्रम बच्चों के विकास की एक सर्वांगीण योजना है। इसमें बच्चों की देखभाल उनके जन्म के समय से ही शुरू हो जाती है। बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य और आरंभिक शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है ताकि उनकी प्रतिभाओं का समुचित रूप से विकास हो सके। बच्चों के साथ-साथ इसमें गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं की देखभाल भी की जाती है।

भानुः लेकिन शुभा जी, भारत में तो करोड़ों बच्चे हैं। क्या यह योजना सब राज्यों में चलती है?

शुभाः सब राज्यों में तो नहीं लेकिन भारत के बहुत से राज्यों में चल रही है। इसे दुनिया की सबसे बड़ी बाल-विकास योजना माना जाता है क्योंकि इसमें लगभग **15** लाख आँगनबाड़ियाँ शामिल हैं।

भानुः शुभा जी, बच्चों का आरंभिक विकास क्या घरों पर नहीं होना चाहिए? जहाँ उन्हें माँ-बाप और परिवार का स्नेह, संस्कार और परवरिश मिले। आँगनबाड़ियों की ज़रूरत क्या है?

शुभाः भानु जी, आपने बड़ा सटीक प्रश्न किया। पहले यही माना जाता था कि बच्चों में भाषा, सामाजिक व्यवहार और समझ-बूझ पैदा करने के लिए घर से बेहतर कौन सी जगह हो सकती है? स्कूली शिक्षा छह वर्ष की उम्र के बाद ही शुरू होनी चाहिए। ताकि घर की परवरिश बच्चे को बाहरी दुनिया के साथ स्वतंत्र रूप से जुड़ने में सक्षम बना सके।

भानुः यही तो मैं पूछ रहा हूँ! ऐसा क्या हो गया जिसकी वजह से हमने बरसों पुरानी परंपरा छोड़ दी?

शुभाः बच्चों के विकास पर हो रहे मनोवैज्ञानिक शोध से कुछ ऐसी बातें पता चली हैं जिनसे इस परंपरा पर सवाल खड़े हो गए हैं। मसलन जन्म से लेकर छह साल की उम्र तक बच्चे का दिमाग़ तेज़ी से भाषा और जानकारी का ताना-बाना बुनता है जो आस-पास के लोगों की भाषा, व्यवहार और प्रतिक्रियाओं से तैयार होता है। इसकी रफ़्तार तीन साल की उम्र में सबसे तेज़ होती है और छह साल की उम्र तक आते-आते धीमी पड़ने और पक्का आकार लेने लगती है। जीवन में आगे चलकर सीखने की क्षमता और कुशलता बचपन के इन्हीं छह वर्षों में रखी गई बुनियाद पर निर्भर करती है।

भानुः क्या आँगनबाड़ी इस बुनियाद को और मज़बूत बनाने में कोई भूमिका निभाती है?

शुभाः जी हाँ। सीखने के लिए बच्चों को उनकी हरकतों पर निरंतर प्रतिक्रियाओं की ज़रूरत पड़ती है। जिस सहजता से बच्चे एक-दूसरे की निरर्थक लगने वाली हरकतों पर प्रतिक्रिया करते हैं, उतनी सहजता से बड़े नहीं कर पाते। आँगनबाड़ी में बच्चों को बहुत से बच्चों के साथ संवाद करने का मौक़ा मिलता है जो उनके दिमाग़ी और मानसिक विकास के लिए टॉनिक

का काम करता है। संयुक्त परिवारों के टूट जाने और माता-पिता दोनों के काम पर जाने के कारण आज के युग में बच्चों के लिए आँगनबाड़ियाँ अनिवार्य भी हो गई हैं।

भानुः लेकिन यदि परिवार संयुक्त हो और माता-पिता में से एक ही काम पर जाता हो, क्या तब भी बच्चों को आँगनबाड़ी भेजना चाहिए?

शुभाः बाल मनोविज्ञान तो यही कहता है कि जो बच्चे तीन साल की उम्र से आँगनबाड़ी या आरंभिक स्कूलों में जाते हैं उनमें आत्मविश्वास अधिक होता है और वे सामाजिक मेलजोल में अधिक कुशल साबित होते हैं। साथ ही आरंभिक स्कूल और आँगनबाड़ी के माहौल में बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा को भी मुखर होने के अधिक अवसर मिलते हैं।

भानुः शुभा जी, इतनी दिलचस्प जानकारी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

शुभाः मुझे बुलाने के लिए धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 4: प्रश्न 16–23**

FEMALE: **स्वतंत्रता और अनुशासन पर दो मित्रों के विचारों को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।**

यह बहस आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * भारत की परंपराओं की प्रशंसा करने वाले अक्सर हमारी पारिवारिक व्यवस्था और बड़ों के सम्मान का उदाहरण देते हैं। अपने से बड़ों के पाँव पड़ना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। बड़ों की परिभाषा को कुछ ज़्यादा ही फैला दिया गया है। जैसे नेताओं के पाँव पड़ने वालों की भी कतारें देखी जा सकती हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुओं के यहाँ उनके पाँव पड़ने वाले शिष्यों की कतारें लग जाती हैं। बच्चे बचपन से यही देखकर बड़े होते हैं कि बड़ों के पाँव पड़ना और छोटों के कान ऐंठना स्वीकार्य बातें हैं। ताकतवर के सामने निर्बल का झुकना सामान्य बात बन जाती है।

FEMALE: लेकिन संसार के किसी विकसित देश से तुलना की जाए तो लगता है कि एक आम भारतीय कहीं अधिक स्वतंत्र है। यातायात, सफ़ाई और सुरक्षा के नियमों को ताक पर रखते हुए बस अपनी सुविधानुसार काम करना सामान्य सी बात है। भगदड़ में मर जाना मंज़ूर है लेकिन बस हो, रेल हो, मंदिर या मज़ार हो, पंक्ति बनाना अपनी स्वतंत्रता को रास नहीं आता। आता भी कैसे? आज़ाद तबीयत वालों ने उन्हें यह सिखाया ही नहीं और वे सिखाते भी कैसे? जब उन्हें खुद भी यह रास आया ही नहीं!

MALE: वास्तव में इस तरह की इच्छानुसार काम करने की छूट को स्वच्छंदता कहना ज़्यादा उचित होगा। क्योंकि स्वच्छंदता सारी व्यवस्थाओं का उल्लंघन करती है। जबकि स्वतंत्रता का मतलब होता है व्यवस्थित रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति। प्रतिबंधों का न होना स्वतंत्रता का मात्र एक पहलू है, इसकी विशेषता नहीं। जबकि स्वतंत्रता ऐसी अवस्था है जिसमें आपको नियमानुसार विकल्प चुनने की छूट होती है। कोई भी व्यक्ति अपने हितों की सुचारु रूप से रक्षा तभी कर पाता है जब वह प्रतिबंधों के भार से मुक्त हो। तभी वह अपनी बुद्धि और विवेक से निर्णय कर पाता है। इसलिए स्वतंत्रता का अनुशासित होना बेहद ज़रूरी है।

FEMALE: इसलिए आज के अध्यापकों का कर्तव्य बालकों को आतंकित करने के बजाय उनमें स्वस्थ आदतों का निर्माण करना है। अनुशासन का नया अर्थ है छात्रों को एक जनतांत्रिक सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना। अनुशासन का ध्येय व्यक्ति के ज्ञान, शक्ति, आदतों, रुचियों और आदर्शों को यानी उसके व्यक्तित्व को उसके मित्रों तथा संपूर्ण समाज की भलाई के लिए तैयार करना है। शिक्षा का यह उद्देश्य होना चाहिए कि व्यक्ति स्वेच्छा से अनुशासन बनाए रखने में कामयाब बने। स्वतंत्रता और अनुशासन एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। इन दोनों का जीवन में ऐसा सामंजस्य होना चाहिए कि वह बालक के व्यक्तित्व के विकास में रुकावट न बने।

MALE: स्वतंत्रता के मायने अलग-अलग लोगों के लिये अलग-अलग हो सकते हैं। ऐसे लोग कम ही हैं जो इस बात को समझते हैं कि उनकी स्वतंत्रता उनके सह-नागरिकों की स्वतंत्रता का आदर करने पर निर्भर करती है। सच्चे अर्थों में स्वतंत्रता वही है जो अपने सह-नागरिक की स्वतंत्रता का अतिक्रमण न करे। इस स्वतंत्रता को हासिल करने के लिये नागरिकों के व्यक्तिगत प्रयास के साथ एक अन्य तत्व भी आवश्यक है और वह है मज़बूत शासन व्यवस्था। सामान्य अपराधियों से लेकर आतंकवादियों तक सभी को अपराध की कल्पना करने से पहले ही दण्ड के भय का पता हो तब ही सब नागरिकों की स्वतंत्रता सुनिश्चित हो सकती है।

FEMALE: निजी स्वतंत्रता का हमारे समाज, उसकी परंपरा और संस्कृति, उसके आचार-विचार और समाज द्वारा स्वीकृत नैतिकता से विरोध नहीं होता बल्कि वह उसकी निहित शक्ति होती है। खुले आकाश में उड़ती पतंग कितनी स्वतंत्रता से विचरण करती है! लेकिन कभी सोचा है कि उसकी आज़ादी भरी उड़ान को दिशा और सहारा देने वाली डोर कट जाए तो क्या होता है? पतंग कट जाती है। फिर न उसकी उड़ान रहती है न ही उसका अस्तित्व। हमारी स्वतंत्रता हमें ऊपर उठाती है परंतु यह तभी तक सुरक्षित है जब तक हम कर्तव्य की डोर से बँधे हैं। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 4 की इस बहस को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**
This is the end of the examination.

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2023